अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनर्विलोकन

अध्याय द्वितीय : संबंधित साहित्य का पुर्नावलोकन

2.1 प्रस्तावना
2.2 साहित्य का पुनर्वीक्षण क्या है
2.3 लैंगिक असमानता : एक ऐतिहासिक अध्ययन (अनुज कुमार)
2.4 उच्च शिक्षा में लैंगिक असमानता (श्रुति आनन्द)
2.5 संबंधित साहित्य का अध्ययन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनर्वलोकन

2.1 प्रस्तावना

अनुसंधान मानव मात्र के लिए सतत् रूप से चलता हुआ एक अनवरत प्रयास है, जिससे वह ज्ञान और अनुभव के किसी एक या अन्य क्षेत्र में ऊँचाईयों को छूने का प्रयास करता है। प्रत्येक अनुसंधान की नींव पहले किये गये अनुसंधानों पर टिकी रहती हैं और वर्तमान में किये गये अनुसंधान आगे भविष्य में किये जाने वाले अनुसंधानों की राह प्रशस्त करते हैं। पशुओं की तरह मानव में ज्ञान की शुरूआत हर नई पीढ़ी से नहीं होती, वह भूतकालीन पुर्वार्जित एवं संग्रहित ज्ञान का लाभ उठाकर आगे बढ़ता है। अपने पूर्वजों के अनुभवों और गलतियों से हम सीख लेते हैं। और फिर अपने अनुभवों से भावी पीढ़ी मे मार्गदर्शन करते हैं। यह सब कुछ व्यवहारिक विज्ञानों में किये जाने वाले अनुसंधानों तथा अनुसंधानकर्ताओं के साथ होता है। यही कारण है कि अनुसंधान अध्ययन का नियोजन एवं क्रियान्वयन करने से पहले सभी अनुसंधानकर्ता अपने अध्ययन से संबंधित सार्थक साहित्यक की खोज एवं पुनर्वीक्षण के कार्य में लगे हुए पाये जाते हैं।

2.2 साहित्य का पुनर्वीक्षण क्या है

अनुसंधान अध्ययन में दो अलग–अलग ऐसे कार्य, जिनका नाम, संबंधित साहित्य के लिए खोज करना और साहित्य का पुनर्वीक्षण करना है जो कि एक अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने अध्ययन के नियोजन एवं क्रियान्वयन के लिए आवश्यक सूचनाएँ एवं प्रतिपुष्टि प्राप्त करने के लिए अपने निर्धारित क्रम में एक–एक करके सम्पन्न किये जाते हैं। जब एक अनुसंधानकर्ता के पास, अपनी साहित्य की खोज के परिणामस्वरूप अपने अनुसंधान प्रकरण से संबंधित बहुत सारी सूचनाएँ तथा प्रदत्त भंडार (लिखित, मौखिक या इलेक्ट्रोनिक स्वरूप में) प्राप्त हो जाता है तब वह इसका मूल्यांकन और पुनर्वीक्षण करने का प्रयास करता है ताकि वह अपने अध्ययन का कुशलतापूर्वक तथा अच्छे ढ़ंग से नियोजन करने तथा

क्रियान्वयन करने के लिए, उन सूचनाओं से आवश्यक लाभ प्राप्त कर सके। इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत अनुसंधान से संबधित साहित्य का पुर्नावलोकन किया गया जो निम्नानुसार है।

2.3 लैंगिक असमानता : एक ऐतिहासिक अध्ययन (अनुज कुमार)

समाज का निर्माण स्त्री–पुरूष के सहयोग से होता है। इसका आशय है कि सामाजिक व्यवस्था के संचालन में दोनों की समान भागीदारी, महिलाओं की स्थिति को लेकर प्रारंभ से अब तक दो तरह के विचार मौजूद हैं – एक वह जो उसे परंपरागत रूप से पुरूषों के अधीन एवं ग्रहिणी के रूप में समझते हैं। वहीं दूसरी ओर, एक समुदाय ऐसा है जो उसे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक ओर बौद्धिक रूप से सशक्त स्वीकारता है। विभिन्न संस्कृतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रखने वाली नारी की स्थिति सदैव परिवर्तित होती रहती है। प्राचीनकाल में महिला को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। धर्मशास्त्रों एवं वैदिक ग्रंथों के आधार पर उन्हें पुरूषों की तरह सामाजिक,धार्मिक,शैक्षिक और सांस्कृतिक अधिकार प्राप्त थे। अर्थव वेद में तो उन्हें घर एवं परिवार की सामग्री कहा गया है। जीवन साथी चुनने वैदिक कर्मों में पतियों के साथ भाग लेने की चर्चा है।

2.4 उच्च शिक्षा में लैंगिक असमानता (श्रुति आनन्द)

1995 की मानव विकास रिपोर्ट में पहली बार लिंग संबंधी विकास को शामिल किया गया था यह लिंग संबंधी विकास सूचकांक अथवा जी.डी. आई है।

(1) स्वास्थ्य और दीर्घायु जीवन (संभावित आयु के लिहाज में)

(2) शिक्षा (प्रौढ़ साक्षरता तथा कुल भर्ती छात्रों की संख्या के हिसाब में)

(3) ठीक–ठाक जीवन स्तर :– क्रय शक्ति और आय के मुताबिक इन आयामों की उपलब्धियों को इन्हीं पैमानों तथा दोनों में असमानता के आधार पर निर्धारित करता है। बुनियादी मानव विकास में स्त्रियों तथा पुरूषों के बीच जितनी अधिक असमानता होगी उतना ही उस देश की जी.डी.आई. (लिंग संबंधी विकास सूचकांक) उसका एच.डी.आई. (मानव विकास सूचकांक) की तुलना में कम होगी।

निष्कर्ष :– इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं के उच्च शिक्षा में कम भागीदारी तथा विभिन्न क्षेत्रों में कम प्रतिनिधित्व के लिए विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक कारक उत्तरदायी रहे हैं। यद्यपि महिलाओं के प्रति सामाजिक भेदभाव तथा सांस्कृतिक पुर्वाग्रह आज भी उपस्थित हैं तथापि महिलाओं ने स्वयं की उपस्थिति उन क्षेत्रों में भी दर्ज की है जो कल्पनातीत थी।

2.5 समस्या कथन विद्यालयों में समाजीकरण की प्रक्रिया और लैंगिक भावना के विकास के कारक (कंचन शर्मा) (सिमोन द बुआ कहती हैं)

एक बच्चा जो लड़की हो या लड़का समान रूप से अपने शारीरिक अंगों, ऑख, कान, नाक, हाथ, पैर आदि के माध्यम से संसार को समझता है अपने सेक्स से नहीं। दोनों ही समान रूप से मॉ की कोमल ममता में समान रूप से सेक्सुअल संतुष्टि खोजते हैं लड़की भी लड़के की भॉति आक्रामक रूप से भी सबके साथ खेलती है। जहाँ पितृसत्ता व जेंडर असमानताएँ व्याप्त व गहरे स्तर पर अपनी जड़े जमाए हुए हैं वहाँ ये प्रश्न वांछनीय है कि इस जेंडर विभक्त मूल्यों आस्थाओं विश्वासों आदि को गहरे रूप से आत्मसात कर लेते हैं।

2.6 समस्या कथन उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं स्वभाव के प्रभाव का अध्ययन। प्रवीन देवगन रेनु सिंह तोमर

अध्ययन के उददेश्य

(1) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्यन।

(2) लैंगिक भेदानुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

(3) विद्यार्थियों के स्वभाव का अध्ययन।

(4) विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का अध्ययन।

अध्ययन की विधि :– प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शोध की प्रवृत्ति को देखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण (Desriptive survery method) का प्रयोग किया गया है।

2.7 विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बालक–बालिकाओं की बुद्धि स्तर तथा सृजनात्मकता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

(1) उच्च सा.आ. स्तर वर्ग के बालक और बालिकाओं की बौद्धिक क्षमता स्तर का अध्ययन करना ।

(2) मध्यम सा.आ. स्तर वर्ग के बालक –बालिकाओं की बौद्धिक क्षमता स्तर का अध्ययन करना।

2.8 बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक परिवेश माताओं की शिक्षा तथा शैक्षिक का प्रभाव :–रमेश घर दिवेदी

शोध विधि प्रतिदर्श :– अध्ययन का आधार उत्तरी दिल्ली के दो विद्यालयों को बनाया गया, कन्या उच्च शिक्षा विद्यालय है. दूसरा माध्यमिक सहशिक्षा विद्यालय है। दोनों विद्यालय सरकारी होते हुए भी अपनी प्रकृति से एक दूसरे से भिन्न है।

शोध तकनीक :– दोनों प्रकार के विद्यालयों में स्टेनोग्राफी अध्यक्ष विधि के माध्यम से ऑकडों का संग्रहण किया गया पाठ्यपुस्तक विश्लेषण हेतु आलोचनात्मक विधि की मदद ली गई।

शोध प्रविधि :– प्रस्तुत अध्ययन वर्णानात्मक सर्वेक्षण है।

उपकरण :– विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए डॉ. ए. सेन गुप्ता तथा प्रो. ए.के. सिंह (1971) द्वारा निर्मित "सामान्य कक्षा उपलब्धि परीक्षण"।

2.9 "विद्यालयों में समाजीकरण की प्रक्रिया और लैंगिक भावना के विकास के कारण"

शोध के उददेश्य :–

(1) विद्यालय जेंडर भाव को पैदा करने में अपनी किस प्रकार की भूमिका निभाते हैं। इसका विश्लेषण करना।

2.10 लैंगिक भिन्नता के संदर्भ में जुनियर विद्यालय के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके माता पिता के शैक्षिक मूल्यों में संबंध।

अध्ययन का उददेश्य

लैंगिक भिन्नता के संदर्भ में जूनियर विद्यालय के बच्चों की शैक्षिक–उपलब्धि तथा उनके माता पिता के नैतिक मूल्यों में संबंध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– लैंगिक भिन्नता के संदर्भ में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि उनके माता–पिता के शैक्षिक मूल्यों के मध्य संबंध देखने का प्रयास किया गया है।

(1) बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि और उनके माता पिता के शैक्षिक मूल्यों में सार्थक संबंध नहीं है।

(2) बालकों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके माता–पिता के शैक्षिक मूल्यों में सार्थक संबंध हैं।

2.11 उच्च प्राथमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर एवं स्वभाव के प्रभाव का अध्ययन (प्रवीन, देवगन, रेनू सिंह तोमर)

अध्ययन के उददेश्य

(1) जेंडर भेदानुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन ।

(2) विद्यार्थियों की शैक्षिक– उपलब्धि पर जेंडर स्वभाव एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की विधि :– प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शोध की प्रकृति को देखते हुए वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

चयनित न्यादर्श :– प्रस्तुत शोधकार्य में आगरा शहर के हिन्दी माध्यम के विद्यालय के सत्र 2009–10 में शिक्षा प्राप्त कर रहे कुल विद्यार्थियों मे से 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन किया गया है।

2.12 देवी बबिता (2012–13) :– समाज में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन के बारे में 10 वीं कक्षा के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन (2012–13) एम.एड. आर.आई. ई. भोपाल।

प्रस्तुत शोधकर्ता म.प्र. के भोपाल जिले के शहरी एवं ग्रामीण श्रेत्र तक सीमित हैं।

उददेश्य :–

(1) कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधित दृष्टिकोण को जानना।

(2) कक्षा 10 वीं के छात्र–छात्राओं में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण को जानना।

निष्कर्ष :– विद्यार्थियों में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधित दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है और लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधित दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।